हमारे प्रभु सचमुच जी उठे हैं।

जब प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, जब उन्हें दफ़नाया गया, और जब वे मृतकों में से जी उठे — उस समय जो-जो घटनाएँ हुईं, वे सब विशेष उद्देश्य के साथ हुईं। उनमें से कोई भी घटना संयोगवश या परमेश्वर की योजना के बाहर नहीं थी। प्रत्येक घटना में गहरा आत्मिक प्रकाश और ईश्वरीय योजना छिपी हुई थी।

यहाँ तक कि प्रभु यीशु का अपना क्रूस उठाकर घायल शरीर के साथ गोलगोथा की ओर जाना भी पहले से भविष्यद्वाणी की गई थी। उन्हें उस मेम्ने के समान बताया गया जो वध के लिए ले जाया जाता है।

यशायाह 53:7

“वह सताया गया, तौभी उसने सह लिया और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने को ले जाई जाती है, और जैसे भेड़ अपने ऊन कतरने वालों के साम्हने चुपचाप रहती है, वैसे ही उसने भी
अपना मुंह न खोला।”

प्रभु के पार्श्व में भाला भोंका जाना भी भविष्यद्वाणी के अनुसार हुआ (जकर्याह 12:10)। इसका गहरा आत्मिक और शारीरिक

दोनों अर्थ था।
आत्मिक रूप से यह लहू और जल के द्वारा शुद्धिकरण को प्रकट करता है। उनके लहू से हमारे पाप धुल जाते हैं और हमें पूर्ण क्षमा मिलती है; और जल के द्वारा हम परमेश्वर के वचन से शुद्ध किए जाते हैं (इफिसियों 5:26)।

शारीरिक दृष्टि से, जब वे क्रूस पर थे तब उनके पार्श्व में भाला भोंका गया ताकि यह सिद्ध हो जाए कि वे वास्तव में मर चुके हैं। यदि ऐसा न होता, तो लोग कहते कि उन्हें अधमरा ही उतार लिया गया था और बाद में पुनरुत्थान के विषय में बड़ा भ्रम फैलता। परंतु स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर ने यह सब जानकर अनुमति दी कि उनके पार्श्व में भाला भोंका जाए, ताकि सब निश्चित हो जाएँ कि वे सचमुच मर चुके हैं। क्योंकि सामान्यतः कोई मनुष्य ऐसा घाव पाकर जीवित नहीं रह सकता। रोमी सैनिक इसी प्रकार सुनिश्चित करते थे कि दोषी की मृत्यु हो चुकी है।

इसी प्रकार, जब ने प्रभु के क्रूस के ऊपर तीन भाषाओं में शिलालेख लिखवाया, तो वह भी संयोग नहीं था, बल्कि उसमें गहरा आत्मिक अर्थ था। वह इस बात की भविष्यद्वाणी थी कि आने वाले समय में मसीह का प्रचार सब जातियों और सब भाषाओं में होगा।

यूहन्ना 19:19-22

“पीलातुस ने एक शीर्षक लिखकर क्रूस पर लगवाया। उस में लिखा था, ‘यीशु नासरी, यहूदियों का राजा।’
बहुत से यहूदियों ने उस शीर्षक को पढ़ा, क्योंकि जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए थे वह स्थान नगर के निकट था; और वह
इब्रानी, लैटिन और यूनानी भाषा में लिखा हुआ था।
तब यहूदियों के महायाजकों ने पीलातुस से कहा, ‘यहूदियों का राजा न लिख, पर यह कि उसने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूँ।’ पीलातुस ने उत्तर दिया, ‘जो मैंने लिख दिया, सो लिख दिया।’”

कुछ दिनों बाद पिन्तेकुस्त के दिन, जब पवित्र आत्मा उतरा, तो शिष्य विभिन्न भाषाओं में बोलने लगे। यह संकेत था कि अब समय आ गया है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान का संदेश सारी दुनिया की हर भाषा और हर जाति तक पहुँचे। उसी समय से सुसमाचार संसार में फैलना प्रारम्भ हुआ। उस समय मुख्यतः तीन भाषाएँ प्रसिद्ध थीं, पर आज संसार में हज़ारों भाषाएँ हैं — और उनमें भी मसीह का प्रचार हो चुका है।

जब प्रभु को कब्र में रखा गया, तो एक बहुत बड़ा पत्थर लुढ़काकर द्वार पर लगाया गया और उस पर मुहर भी की गई। वह पत्थर अत्यंत भारी था। स्त्रियाँ जब सप्ताह के पहले दिन कब्र पर गईं, तो वे आपस में कह रही थीं:

मरकुस 16:2-4

“और सप्ताह के पहिले दिन बहुत तड़के, जब सूर्य निकला ही था,
वे कब्र पर आईं।
और आपस में कहती थीं, ‘हमारे लिए कब्र के द्वार से पत्थर कौन हटाएगा?’
पर जब उन्होंने दृष्टि की, तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है; क्योंकि वह बहुत बड़ा था।”

स्वर्गदूत ने पत्थर को केवल द्वार से हटाया ही नहीं, बल्कि उसे कब्र से दूर लुढ़का दिया।

लूका 24:1-2

“सप्ताह के पहिले दिन बहुत भोर को वे कब्र पर आईं…
और उन्होंने पत्थर को कब्र से लुढ़का हुआ पाया।”

यह इस बात का प्रमाण था कि वहाँ कोई साधारण घटना नहीं, बल्कि चमत्कार हुआ था। परमेश्वर ने ऐसा होने दिया ताकि लोग विश्वास

करें कि वास्तव में यीशु जी उठे हैं।

साथ ही पहरेदारों ने भी स्वर्गदूत को देखा और जाकर महायाजकों को सब समाचार दिया (मत्ती 28:1-4)। यदि उनके पक्ष से भी गवाही न होती, तो और भी बड़ा भ्रम फैलता।

ये सब घटनाएँ इसलिए हुईं कि हम — तुम और मैं — विश्वास करें कि यीशु सचमुच क्रूस पर चढ़ाए गए, मरे, और तीसरे दिन जी उठे। यदि तुम आज यह विश्वास करते हो, तो तुम उद्धार पा सकते हो।

यदि तुम विश्वास करते हो कि मसीह जीवित हैं और तुम्हें बचा सकते हैं, तो आज अपने पापों से मन फिराओ और उनसे दया माँगो। उनका प्रेम असीम है। चाहे तुम्हारे पाप कितने ही बड़े क्यों न हों, वे क्षमा करने के लिए तैयार हैं।

अब जहाँ हो, कुछ समय अकेले में घुटने टेककर विश्वास से यह प्रार्थना करो:

प्रार्थना:

“हे परमेश्वर पिता, मैं तेरे सामने आता हूँ। मैं मानता हूँ कि

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

मैं पापी हूँ और मैंने बहुत पाप किए हैं। मैं दंड के योग्य हूँ। परन्तु तू दयालु परमेश्वर है। आज मैं अपने सब पापों से सच्चे मन से मन फिराता हूँ।

मैं अंगीकार करता हूँ कि यीशु मसीह प्रभु हैं और वही संसार के उद्धारकर्ता हैं। उनके पवित्र लहू से मुझे शुद्ध कर और आज से मुझे नया जीवन दे।

धन्यवाद प्रभु यीशु, कि तूने मुझे ग्रहण किया और क्षमा किया।

आमीन।”

यदि तुमने यह प्रार्थना विश्वास से की है, तो अब अपने जीवन में परिवर्तन दिखाओ। जो बातें परमेश्वर को अप्रिय हैं, उन्हें छोड़ दो। पापमय जीवन से अलग हो जाओ। तब परमेश्वर तुम्हारे भीतर वास करेगा।

साथ ही किसी जीवित और आत्मिक कलीसिया को खोजो, जहाँ तुम अन्य विश्वासियों के साथ संगति कर सको, परमेश्वर की आराधना करो, और बाइबल सीखो। उचित जल-बपतिस्मा भी लो, प्रभु यीशु मसीह के नाम में, पापों की क्षमा के लिए।

□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ — □□□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp